

ଆବହ ଧର ମହାତ୍ମ ହିମା

ଦୀନାନନ୍ଦ ମହା

कान्ह पर लहास हमर

(मैथिली गजल संग्रह)

कलानन्द भट्ट

कलानन्द भट्ट
कलानन्द भट्ट

प्रकाशन

किसुन संकल्प लोक

मुपील

प्रकाशक :

किसुन संकल्प लोक

सुपौल

(उपरि उल्लेखित)

सर्वाधिकार : नोलिमा भट्ट

पहिल लेख : हजार प्रति

सितम्बर, १९८३ ई०

दाम : चारि टाका

मुद्रक :

मुरलीधर प्रेस

पटना-६

गजलक मादे

आधातित होइतो गजल आइ प्रत्येक भाषाक काव्यमय अभिव्यक्ति भऽ गेल अछि । मैथिलीमे पूर्वक अपेक्षा आइ गजलक आवश्यकताके अधिक तीव्रतासे अनुभव कयल जा रहल अछि । एहि दशकमे आबिकऽ आने भाषा जकाँ मैथिलीमे गजलक अति व्यापक आ सघन भेल अछि । सभसें सुखद छँक जे गजल अपन शाब्दिक अर्थक परिधिके कूरताक संगे तोड़ि डेलक अछि । अपन पुरान आ मूल्यहीन केँचुआकेँ उतारि फेकलक अछि आ जन-सामान्यक प्रत्येक क्षणमे, ओकर स्वासक आरोह-अवरोहमे, ओकर दुख-दैन्य-पीडामे, ओकर सुख-उल्लासमे अपन मूल्यवान साजेदारी स्थापित कयलक अछि । आजुक गजलकेँ सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक अवस्थासे बेस गहीर सम्बन्ध छँक तेँ एहि तीन अवस्थामे फसरल कुव्यवस्था, असमानता, अन्याय, छुटावार आ जमीनकेँ गजलक प्रत्येक शब्द अपन तीक्ष्णतासे, अपन धार से आ अपन वेगसे ध्वस्त करबाक उपवास करैत अछि ।

आजुक मानवीय जीवन बड़ दुखद स्थितिसे गुजरि रहल अछि । पूँजीवादी आ सामन्ती व्यवस्थाक मुट्ठी भरि लोक सामान्य जन-जीवनकेँ बड़ड निरीह आ पंगु बुझैत अछि । ओकर कोनो तरहँ गतिविधिके ई मुट्ठी भरि लोक अपन एक इशारापर नष्ट कऽ दैत अछि अथवा असामाजिक तत्व कहि अथवा देशद्रोही कहि ओकरा सभ तरहँ निराश आ हताश करबाक प्रयत्न करैत अछि । हमर सभक रचनात्मक गतिविधि ओकर सभह एहि तमाम प्रयासकेँ ध्वस्त करबाक बेगवान साधन बनय, से कामना करैत छी ।

हम अपन गजलक माध्यमसे ओहि हताश आ निराश जन-जीवनमे नव प्राण फुँकबाक प्रयास करैत छी । जँ शब्द सेँ ओ महत्वपूर्ण आ अवश्यम्भावी क्रांति भऽ सकैत अछि तेँ हम गजलक माध्यमसे ओहि क्रांतिक आह्वान करबाक प्रयास करैत छी । अपन निरन्तरतामे ई सहस्रौ मनुबख कहियो पराजित नहि भेल, हमरोलोकनि कहियो पराजित आ हताश नहि होण्ड । गजल निश्चित रूपसेँ हमरा सभक क्रांतिक संवाहिकाक रूपमे काज करत ।

गजन हमरा अभिव्यक्ति सभसँ सहज-सुलभ माध्यम बुझाईत अछि, तेँ अपन हृदयक सम्पूर्ण भावनातिकेँ हम गजनक माध्यमे व्यक्त करबाक चेष्टा करैत छी ।

एहि संग्रहक प्रकाशन हमरासँ किन्तहु संभव नहि छत जेँ श्री दीपक कुमार बज्जी, श्री डी० पी० सिंह, श्री सुरेन्द्र गराह, श्री रामनाथ सिंह, श्री विश्वनाथ मिश्र आ श्री बाणा प्रसाद सिंह सहयोग नहि करितथि ।

छोट पाइ सन मिनेही केदार काननक सहयोग अद्वितीय अछि । श्री पटनासँ सदिखन प्रेरित करैत रहलाह आ हम गजन लिखैत रहलहुँ, मिथिला मिहिरक लेल पठबैत रहलहुँ । हिनका विषयमे अधिक कहब व्यर्थ ।

एहने किछु व्यक्ति जेना सर्वश्री रामानुजह झा, सुभाषचन्द्र यादव, प्रो० धीरेन्द्र 'धीर', महाप्रकाश, डा० महेन्द्र, तारानन्द विद्योगी, एम० एम० जग तथा आकाशवाणी दरभंगाक उद्भवांश शास्त्री प्रति अपन आभार व्यक्त करैत छी जे समय-समय पर अपन स्नेह-पुष्पासँ हमरा तिरत करैत रहलाह अछि ।

भाइ उदयचन्द्र झा 'विनोद' आ बिभूति आनन्द धन्यवादक पात्र छथि जे प्रेसक ओसरी सँ मुक्ति दिअीलनि ।

एहि संग्रहक अधिकांश गजन मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि ।

मुरलीधर प्रेस, पटनाक व्यवस्थापक श्री देवेन्द्र शास्त्री धन्यवादक पात्र छथि जे एतेक शीघ्र एकर प्रकाशन संभव भेल ।

सितम्बर, १९८३ ।

—कलानन्द भट्ट

घर घरेक आगि सँ अछि जरल जा रहल
भाइ सँ भाइ द्वेष भरल जा रहल ।

कोन आयल जमाना जुआरी एतय
भावना अविवेकी बनल जा रहल ।

क्षुब्ध घरती गगन नयन मूतल अपन
अछि बसातो बलाती बनल जा रहल ।

फूल-कांट मे अन्तर कयनिहार जे
ओ चमन छोड़ि क' अछि चलल जा रहल ।

के कहत चोर के चोर सभ चोर अछि
आइ रामो सँ चोरी कयल जा रहल ।

□

मुंह देखि-देखि मुडबा बंटे छी अहाँ
लाभ जकरे सँ पात भरै छी अहाँ।

चान दुतियाक क्रमसँ अघर पर बढ़य
रंग गिरगिट जकाँ बदलै छी अहाँ।

छी महामान्य विष-मघ भरल घल सन
ब्यूह रचिक' सहायक बनै छी अहाँ।

डेग नापल उठय ने हुसल आई तक
घरा-अम्बर केँ मुठिये रखै छी अहाँ।

सम जानय मुदा क्यों न बाजैत अछि
जे बाजय करेजे कटै छी अहाँ।

□

किन्नर चापूरी महानिधि
लोक पर कोमल चमकै

कह की कथा कहना जीबि रहल छी
फाटल गुदरी अपन हम सीबि रहल छी ।

दाम श्रम केर संचित भजा हाट पर
बोझ महगी बनल हम लीबि रहल छी ।

भार परिवार जिनगी बनल ठूँठ सन
आब सूदिक जहर हम पीबि रहल छी ।

कोना बाँचित प्रतिष्ठा विवशता भरल
घसल टांग दलदलमे खोचि रहल छी ।

पौरुष गमा हम ने बेसी, अछि चिन्ता
चिन्ताकुल माथ अपन पीटि रहल छी ।

आम गुरुकुल जीवन
मिलल । तब से-
क शुभारंभ होय-
आकाश-प्रदीप ।

□

सभ लूट छै लूट ने लूट भचल छै

सक जकरा ते बेह-इसनदार बनल छै ।

कागत पर देखू जं देखक महा योजना

घरती पर सुखल आमील बनल छै ।

मारु विवेक चलू पेटो ने भरैछ

नीति कानय कुनीतिक अवार चलल छै ।

जं चुकव तं चुकव मुँह चुकरी होयत

के कहत अँट कोन गरे बंसि रहल छै ।

बात रखवारक तं कात करु काका

ओ खोपड़िये खेत उजाड़ि रहल छै ।

□

शरमा

ने रहल घूस, घूस व्यवहार बनल छै
युग आयल एहन की सदाचार बनल छै ।

ऊपर सं नीचा मे नीचा सँ ऊपर धरि
रेलक डिब्बा सन जोड़क जोगाड़ बनल छै ।

नेताके पार्टी चलयबाक नाम पर
श्री हाकिम लेल घरनीक हार बनल छै ।

ससरत ने काज कोनो आर्गा बिनु घूसक
आइ घूसेक सभठाम बाजार गरम छै ।

कण-कणमे व्याप्त भेल जन-जनमे पसरल
हनुमाने सन शवितक भंडार बनल छै ।

वैध ने करेछ सरकार किए एखन धरि
जखन कोमलतम नाम 'उपहार' बनल छै ।

घूसक ने स्रोत कोनो जिनका छथि निन्दक
आइ हुनके टा लेल कदाचार बनल छै ।

□

9/4/2014

बाट बाधित पहाड़े छै पाटल जखन
सीयत दरजी के आकासे फाटल जखन ।

आइ अंगा फकीरक घरा अछि बनल
सौंसे चेफड़ी समस्येक साटल जखन ।

द्वेष, ईर्ष्या, घृणा, उर, तनावक लहरि
एक दोसर सँ दूध जकां फाटल जखन ।

गमं भोसम बनल लपलपाबैछ जीह
प्यास छै शोनिते केर जागल जखन ।

लीख पर ने अपन वियतनामे रहल
देश हमरो वैह लीख लागल जखन ।

□

मरि-मरिक' जे जीवय से आदमी चाही
राखय बिहाड़ि हाथमे से आदमी चाही ।

अधिकार लेल निकलय बनिक' प्रचंड जे
लह-लह करंत सांप सन से आदमी चाही ।

ढाहय जे भीत शोषणक गर्जन करेत घोर
बनिक' कराल काल सन से आदमी चाही ।

लाबय जे लादि पीठ पर समताक चान के
नभसँ प्रबल राकेट सन से आदमी चाही ।

हर्षक सुगंधि बांटय वर-घरमे जे अनूप
अनूपम बसन्त ऋतुसन से आदमी चाही ।

□

मनमोहन मेरा.

घाड़ बगुली से टाका उड़ै छै बजार मे
घो बिन पाँखि बगड़ा बने छै बजार मे ।

टकही दू टकही केर गनती ने कोनो
नोर नमरीक नयन से खसै छै बजार मे ।

घो हँसिक' चलैछ पाइ कारी छै जकरा
पाइ कारी ने जकरा सखै छै बजार मे ।

खेपत ई जीवन गरीब मजदूर कोना
समय दिन-दिन सामंती बने छै बजार मे ।

हम फानी मे व्याघाक वाझल हरिण जका
पनरहियो ने महिना चलै छै बजार मे ।



३६११

पेट के पीठ बनाबी कोना हम कहियो ।
राति के दिनमे सजाबी कोना हम कहियो ।

छे ने वस्त्र डाँड़मे कप्पो लपेटि रहि लेबे
बिना अन्न भूख बुझाबी कोना हम कहियो ।

पात कोबियोक आव हाटमे बिकय लागल
सेहन्ता दालिक मेटाबी कोना हम कहियो ।

हृदय मानल जे गरीबक अछि सुखल लकड़ी
लगाक' आगि जराबी कोना हम कहियो ।

सपना जे रहय भेल बालुक गरम घरती
फूल आसाक उगाबी कोना हम कहियो ।

□

युग बदलल जमाना बदलि गेल छै
विकृतिक रंग मुँह पर ले भरि गेल छै ।

रहल आकाश ओ ने रह्य जे तखन
पशुओ देखि बोनमे भरमि गेल छै ।

जप्त गांधीव पांडव जहलमे पड़ल
कृष्ण-शकुनीमे जूझा पसरि गेल छै ।

द्रौपदीक हाल पर ने कननिहार क्यो
मुखिया लग गहूम लेल तरसि गेल छै ।

दया करुणा बनल रक्त लोभी चिता
बुद्धदेवो पर हिंसा नमरि गेल छै ।

□

पियासे बकेल हरिणा आइ बंशाखी रौदमे
गदहा पर चढ़ल अनंग आइ बंशाखी रौदमे ।

उड़ल परवा जे घुटके छल नचैत चौबटिया पर
सोहरैत देखि भुजंग आइ बंशाखी रौद मे ।

देल भादेश सूली केर गिरगिट सन न्यायमूर्ति
खड़िया के भेटल सजाय आइ बंशाखी रौद मे ।

ठकिक' मृगराज के ओ कयलक बन्न पिजड़ा मे
हाथी पर उलुआ सवार आइ बंशाखी रौद मे ।

लेल सचिवक पद गिद्ध मुकुट नढ़ियाक माथ पड़ल
अछि आतकित वन-प्रदेश आइ बंशाखी रौद मे

□

अहाँ जोबिते मनुक्ख के जरा रहल छी
 घेरि गामे के स्वाहा करा रहल छी ।
 हाय पीड़ाक धनगर विकट घोर मे
 दानवी-वृत्तिके दनदना रहल छी ।
 ने बूझल बूढ़, नेना, ने मीगी, मरद
 भाग्य जे बन्नक सँ उड़ा रहल छी ।
 मनुष्यता भागल क्रूरता सँ अहाँक
 सामंती-प्रथा पुनि चला रहल छी ।
 कने सोचू कोना खीचि नूआ अहाँ
 पांचाली के नडटे बना रहल छी ।
 कोरवी तत्व ल' अहाँ शकुनि बनल
 नरमेघक ई पासा रचा रहल छी ।

□

(अनुवाद)

॥ श्रील कोमल हमर अछि सोहारी बनल
 भोर भागल छै साँझ शिकारी बनल ।
 ॥ हम झरल पात गाछक सदृश ठाढ़ छी
 अछि समस्या अगरी पछारो बनल ।
 ॥ धरती फाटल गगन माथपर अछि चढ़ल
 ने सहारा कोनो बोझ भारी बनल ।
 ॥ छल जकर आस अछि ओ टुटल खाट सन
 सुखा क' ओकर रूप कारी बनल ।

अछि कोनो मोटा कोय
 अपन नहि । अगल वीपन वा बोझ ।
 १५/८/८६ । एतना ते आकाश ।

□

भेल ई की, कहाँ से लहरि गेल अछि
प्रश्नवाचक घरा पर पसरि गेल अछि ।

आदमी आदमी केर बैरी बनल
कोन नभसे घृणा ई उतरि गेल अछि ।

अछि बटोही सशक्त बनल बाट पर
दिन मे आभास रातुक अभरि गेल अछि ।

गंध टटका पवनमे भरल शोणितक
प्रीत पाहन बनल आस सरि गेल अछि ।

उर कापेछ धरतीक भालरि जकाँ
युग आदम कोना फेर पलटि गेल अछि ।

□

मि. ५१२
कलिकाता ५१२
अ. ५ (५१)

कोन काजक ई काया उपकारी ने भेल
जिनगी जोले सँ की जँ इमनदारी ने भेल ।

मनुख आ मनुखमे ने छै कोनो अन्तर
अन्तर घर्मक कोनो बात भारी ने भेल ।

फूल उपवनमे फुलय वा बालूक ठूह पर
फूल फूले रहत ओ कंटकारी ने भेल ।

नयन फोलू भगाउ साम्प्रदायिक लहरि
लाल सभक घोणित ककरो कारी ने भेल ।

घरमे फूटक क्रिया गर्भ सीमांत अछि
भावना संकुचित विषमय कारी ने भेल ।

मंत्र मधुमय कहाँ ओ विश्व-बन्धुत्व केर
कोन उतरल ई युग दुराचारो ने भेल ।

बाट बाधा सँ प्रगतिक अछि भरल जा रहल
दौड़मे डेग ठमकत गति पछारो ने भेल ।

मनदीपि माया
ने आवस्यक ।

बाट छै वा कि नहि हम हेरा गेल छी

सभ ठाम पसरल समस्या घेरा गेल छी ।

अकबका गेल छी बुद्धि निष्क्रिय बनल

शिथिल जिनगी जेना हम सेरा गेल छी ।

पयर परिवार जातिक सदस्य अछि बन्हल

क्रोल्हुमे हम अभावक पेरा गेल छी ।

महगी-शोषण चढ़ल अछि दुहू कान्ह पर

भूख दोड़ल अबै-ए डेरा गेल छी ।

होयत परिणाम की सभमे विस्मय भरल

हम नीनोमे सरिपहुं बेहा गेल छी ।

■

मंगवीम विधि.

नाम ल' क' जकर घाट पार करे छी
नाह ओकरे मुदा मझपार धरै छी ।

के बुझ अछि गरीबक व्यथा कैर कथा
मूर किछुओ ने, सुदिये पहाड़ करै छी ।

कौर छिनबामे सुँहक ने संकोच अछि
उठा आर्गाँ सँ सुखल पथार चलै छी ।

हम मरी ने जीवो जान हुँकरैत अछि
अहाँ स्वारथमे डूबल शिकार करै छी ।

अपार माया थिकहुँ कालनेमि अहाँ
विष खोसाक' मयूर उपचार करै छी ।

महाराज

□

गंभीर भेल, मोन सिंहकल बसात कोन
उतरल अछि अम्बर सँ नहुँए परात कोन ।

छल जे इजोत केर आइ हमर प्राण गेल
कयलक अभिलाष पर, घाते पर घात कोन ।

आनब हम चान तोड़ि कहने छल घरती पर
छीनैछ ओ बोल आब ई भेलै बात कोन ।

देखल ने देह-दशा दर्दो थिक वस्तु कोनो
बुझल ने गाम, नगर, डगर, कुश-काट कोन ।

मुरझायल प्राण हमर प्रीतक परिणाम ई
बिसरि गेल सत्तामे बाट आ कुवाट कोन ।

गाम (पुष्पक) विद्युत्
अनाम अत्र कवि कोन
विद्युत् नगर को ६०

□

ई जिनगी ने जिनगी जहर भेल छै
आइ सभठाम घरा पर कहर भेल छै ।

शांति सूतल सिनेहक कतहु कोरमे
क्रांति उन्मादिना विष लहर भेल छै ।

भेल सीमांत केर रंग भटरंग सन
भोरमे भावना दूपहर भेल छै ।

आदमी आदमी से घृणामे डुबल
कोन खूनी युगक ई पहर भेल छै ।

नून से खून सस्ता बनल जा रहल
द्वेष केर बाट सभ अपसर भेल छै ।

□

श्रीमती
विद्ययाश्रम
मार्ग ६७५५ ६३६

चूलहा मेरायल आ जाता उदास छे
कानेछ मुनमा ने भन्न केर आस छे।

दूध लछमिनिया केर छातीक सुखावल
बाढ़ीमे सागो ने आब अधिक रास छे।

भेटल ने पंच कतहु घुमि अयलहु भरि गाम
छल जे थारी, लोटा बनियाँक पास छे।

चिन्ता सँ आकुल मोन भूलक बिहाड़ि उठल
सातम ई साँझ हाय ! उध्व मेल साँझ छे।

राकसक टीक जकां नमरल बेकारो
ओ नारा 'गरीबी' कानाक पास छे।

बेकारी !
१६/१०/१९५१
राकसक टीक आ नमरल बेकारो
विष्णुदास

□

हम छोड़व नै दाहव अहाँ केर भीत
 छी बनल सीत शोषण अहाँ केर रीत ।
 कालनेमिक कलामे बनल छी अहाँ
 दी जलमे जहर अछि अहाँ केर रीत ।
 दाम धम केर सभटा क्षण्टि सँत छी
 घाव पर नून सन अछि अहाँ केर प्रीत ।
 हम मली हाथ, सोना मले छी अहाँ
 भूख कानय हमर, घर अहाँ केर गीत ।
 ठाढ़ जिनगी मरने केर डगर पर एतय
 निडर उर, ने कनियो अहाँ केर भीत ।
 करब निर्माण समताक जग जाहिमे
 हम नै हारब, होयत नै अहाँ केर जीत ।

(अन्तिम प्रपञ्च
 अति अरुण)



बिना नूआक नेना हमर काँपि रहल छै
काटल कप्पा सँ तन कोहुना झाँपि रहल छै ।

वस्त्र कोटामे आएल गरीबेक लेल
घनिके रजाइक लेल नापि रहल छै ।

डाहल व्यवस्थाक देहजसुआ हाकिम
हक गरीबेक आइ सभ हाँफि रहल छै ।

अजगर ई जाड़ कहिया ससरत मुँदेया
राति नारेमे घुसियाक काँटि रहल छै ।

सिट-सिट करै जेना गिरहतकेर कुक्कुर
जिनगी आगिक बले बस बाँचि रहल छै ।

नवीनतम की जाने
मिमी लोकरा निवासी
वि(पु.स.)

□

झपटैछ पात कुक्कुर, कुक्कुर सँ आदमी
झगड़ै अछि पेट लेल कुक्कुर सँ आदमी ।
घरती पर भूख आई सड़क जकाँ नमरल
बनल बाज अँइठ लूझै कुक्कुर सँ आदमी ।
छीना-झपटीक क्रम अधिकारक रूप घएल
शोणित-शोणितामय भेल कुक्कुर सँ आदमी ।
कर्म आ कुकर्मोक बन्हन छल टूटि गेल
जे ने करय भूख, पतित कुक्कुर सँ आदमी ।

लेख-लेखिका देवीपति

■

सरिपहुं अहाँ भैया कमाल करे छी
अछि भ्रष्ट आचरण मूदा गाल करे छी ।

पीबै छी गोनरिनर टीनक टीन घी
लोकक लग आदशक ताल करे छी ।

घार जकाँ वसुलाक अपने दिस घूमल
अपने के अपने नेहाल करे छी ।

कएल जे विरोध ओ लटकल त्रिशंकु सन
तरेतर तेन ने जाल करे छी ।

हितैषी बोनहारक नापक लेल बोन
अहंया घट्टी, तरजू-दाल रखे छी ।

एकदोशक आंनिक
आरक्षक परीक्षक

□

U. Panathar Gharar

पत्र आयल अछि मैथिल जागल गामसँ
 पठा रहलहुँ गजल हम हुनक नामसँ
 रक्त तर्पण कएल किछु सहल चोट के
 मातृभाषा सरस मैथिलीक नामसँ
 हनमना गेल कोहबर सजल-स्वर्ग-सन
 मधु हेरा गेल मधुमय मिलन जामसँ
 क्रांति लहरा उठल ल' अङ्गीठी विकट
 शांति केर क्षेत्रमे आई सभ ठामसँ
 लेब अधिकार शोणित बही जे बहत
 उठल ललकार भीषण दहिन-वामसँ

□

४/अप्रैल १९५१

फाटि गेलै घरती आ टूटल आकाश हमर
कनहा पर लादल छै अपने लहास हमर ।

बितल कइएक युग, भोरक प्रत्याशामे
ने उगलै सुहज, आस भेलै उदास हमर ।

रहत की बाट हमर जिनगी केर अन्हारे
डुबल घन बीच, मनक उजरा प्रकाश हमर ।

औषधि बिनु नेता गरीबक बीमार जेना
कुहरै छै, कुहरै अछि, ओहिना हुलास हमर ।

ददंक अभिव्यक्तिक ने शब्द कोनो भेटि रहल
गुमसुम हम मुर्ति जकाँ, प्राण अछि हुतास हमर

मिथिला लोक कौशिक
का कोष चित्रा सिन्हा
मुद्रा

□

बाप बेटीक आइ जमान भेल छै
 सुनिकऽ मांग तिलकक मलान भेल छै
 पस्त भेल पनहीक एँड़ी खिया कऽ
 ठोर फुफरी परल, मयमान भेल छै
 फाटल मिरजइ, प्योन घोतीमे साटल
 बेटी कुमारि द्विपत्ति-खान भेल छै
 दिनोमे राति जकाँ लोक छै तारा
 उड़ल नीन, दुतियाक चान भेल छै
 नीकक कथा कोन बकलेलो बर केर
 श्री, काटर समाजिक विधान भेल छै

□

१६१

जनम व्यर्थ बेटीके देलीं विधाता
 कर्म-अपकर्म हम कोन केलीं विधाता
 ने सहल जा रहल माय-बाबूक पीड़ा
 एहन निर्दय समाज की बनेलीं विधाता
 होइछ मन दुवि मरी, कतेको मरे अछि
 साँप तिलक-दहेज, विष चढ़ेलीं विधाता
 कहै अछि, अजग भऽ रहल छैक गीतिया
 सीतिया लेल बर ने सिरजेलीं विधाता
 अजब यातना, छुट अभिव्यक्ति केर नजि
 पशुए सन नीमुघन, बनेलीं विधाता
 अछि काटर कसाय, कतिमा हाथ लेने
 बलि बूढ़वा पर युवती चढ़ेलीं विधाता

२१

□

भेल बहुत, उठू युवक ! क्रांतिक आह्वान करू
 गन्धकल परिपाटी ई तिलकक अवसान करू
 बीकू जुनि माल जकाँ, हाट पर मनुख अहाँ
 चढ़ा डाक पर ने अपनाकेँ नीलाम करू
 लोभ कोन ? गंगा सन पावन सम्बन्ध बीच
 बिधि केर बिधानकेँ श्रद्धासँ सम्मान करू
 जिनगी केर पूर्णता, प्रकृति ओ पुरुष अहाँ
 पजरि रहल प्रीति, ने कंसारक निर्माण करू
 बन्धु ! आब अबला, ने अबला रहत जानि लिख
 सहत कते दर्द कठिन, हुंकारत ज्ञान करू



६८१

मुहज उगलेसँ की चिनवार अछि अन्हार
 निठुर गिरहत उठा लेलनि सभटा पथार
 खायेब कथी संग मोन लुलुआएल
 बनौल सीखे खेसारी सागक भँचार
 कहि मनक डेढ़ मन लेब कातिकमे देलनि
 कैल पूसेसँ दूनाक लेल तकरार
 लोढ़ने छल नेना अंगो ने भेल
 हाय कानँछ भेल जेना हबोढ़कार
 बग्हा गेल मुँह, आइ मेहठा बरद सन
 छिना गेल छिप्पा, छल साजल संचार

।

लागल आगि घरमे इनार खने छी
 अपन हाथे अपने कपार चुरे छी
 दुविधाक दंतक चपेट बर कड़गर
 मुँहमे छुछुनरि भेल साँप घुरे छी
 चानीक पनही उड़ल फरं चिड़ सन
 मारि प्रीतक कठिन, हम शाम गुरे छी
 फूल जे सिम्मर केर सुगा सन सेबल
 धार तरुमारिक भेल, तूर घुने छी
 माथ पर गिरगिट नचेलारो हित की
 अछि काटर कसाइ कोता हिल बूझ छी

□

देग १५५१

कविताक फारसं जोतब जा ने घरती
तोड़ब ने जाघरि सभ उसराही परती

रहितो कस्तूरी लग मृगा जकां भटकब
रहबे करत ताघरि तृष्णा केर बढ़ती

उपजतें फसिल ने विवेक समता केर
शुचि गंगा ने प्रीतक धरा पर लहरती

जिनगी लहास बनल, सड़िकऽ गन्हाएल
समस्या केर साँपनि जहर नित उगलती

छालही पर दुषक, बंसल हम माछी सन
प्रछि बारुदक होइमे हहरि रहल घरती

गंगा के मरिणील
घोषवाक लल ५/१०/१८

अन्तरमे नित्य महामारत चले-ए
 घेरा व्यूहमे अभिमन्यू मरे-ए
 अपन आति अपने पका आगिमे
 बंसल गाछ तर, भीम भूखल चखे-ए
 छे डाका पड़ल घर, खसल वज्र नभसे
 माथ पर हाथ धरने युधिष्ठिर कने-ए
 आन्हरक सन्तान सह-सह करे अछि
 अजुनके सभ कयो नपुंसक कहै-ए
 बिना वस्त्र कृष्ण धयल बाट बोनक
 भयसे दुःशासन केर धर-धर कंपे-ए

□

५१ वस्त्रास्त्रादि

बानरक हे'ज जकां बीख रहल लोक
 रंगल सियार जकां लोक रहल लोक
 बड़बा लेल आगाँ एक-दोसरासँ
 बचनाक सूत्र ध' दोड़ रहल लोक
 उज्जर जतेक जे तते से कारी
 कारी-सन आइ सिरमौर बनल लोक
 जोबाक स्तर खसल निरघिन भेल
 जे न करय पूजी, पछोड़ पड़ल लोक
 रहत विषमता ई जाघरि घरा पर
 ताघरि अविवेक सिलोट रहत लोक

आपसी देय दाम-वदेय



कथनी आ करनीमें अन्तर पड़े-ए

औ भाषण जते, कहाँ राखन पड़े-ए

पूजी, मशीन दुइ पाट बीच आदमी

पिसा रहल, चिक्कस गहूँमक बने-ए

थमसं जकर खेत उपजैछ आइ ओ

रोटी पर नून, मरचाय लय खलै-ए

सत्ता केर शासन व्यवस्थाक अढ़मे

अंगुरी अनीतिक संगमे रमे-ए

मैथिल किछु तहिना मैथिलिक नामपर

अपने हित सघबा के आकुल रहै-ए

पिप्ले मित्र प्रकाश
आर. भा. भा.
आर. भा. भा.

मोन पड़ल आइ अपन आङन, घर, गाम
 पत्र लिख ककरा, छी सोचि रहल नाम
 जिनगीक क्षण ओ इतिहासक पृष्ठ भेल
 गलियारी गंगा, सीमान बनल घाम
 भीत मनक नाइर, सरतियो भुलाएस
 दूर गेला भैया हमर जगसँ राम
 घर छोट-छोट भीत चूनासँ ठेउरल
 चित्र ओहिपर राधा-कृष्णक ललाम
 देखबा ले आखि कान सुनबा ले आकुल
 ढोरबा चमार केर, बउआ परनाम
 सत्रासक युग ई अभावक बिहाड़िम
 कोम्हर के ठाढ़ अछि कतरा कोन ठाम २१

□

॥ १० ॥ ॥ १० ॥ ॥ १० ॥ ॥ १० ॥

चमकले ने बिजुरी, हड़ताल घटा कयलक
घरतीक हवा लगले, हड़ताल घटा कयलक
उषम विषम, तावा सन सउँसे तबल घरती
इनारोमे भेल ने जल, हड़ताल घटा कयलक
मारल भदइ गेल अगहनियो पर आफत
आब बितल अषाढो हड़ताल घटा कयलक
छटपटमे प्राण, कृषक चिन्तामे डूबल सभ
आशंका अकालक, हड़ताल घटा कयलक
इन्द्रक सरकार नहि मानैछ माड ओकर
आइ शिक्षके सभ अडियल हड़ताल घटा कयलक

॥ १० ॥ ॥ १० ॥ ॥ १० ॥ ॥ १० ॥



एहि जंगलसँ ओहि जंगलक जानवर
 नीक अछि, भादमीसँ कतहु जानवर
 दिनमे रूप किछु आ रातिमे रूप किछु
 नहि बनाबैत अछि बन्धु, ओ जानवर
 उर बसा द्वेष, ईर्ष्या, घृणा केर लहरि
 रक्त-तर्पण करैछ ने कोनो जानवर
 डूबिकऽ वासना केर दुर्गन्धमे
 नहि सुनल, बलात्कारी बनल जानवर
 अपन हाथे अपने परिधि आदमियतक
 तोड़ि देलक मनुख, ने तोड़ल जानवर

मनुष्यक हृदयक कोही नै मेरी
 मनुष्यक मनुष्यक कोही नै मेरी
 मनुष्यक मनुष्यक कोही नै मेरी

भेल जिनगी जहर, आब जीवै कोना
 जखन दिने ग्रन्हार, राति कटवै कोना
 ठूठ भेल गाछ जका गिरहत उदास छै
 हम छी लत्ती बिन सूडक लतरवै कोना
 बसातो बगदि गेल फुटहोपर आफत
 पानिए ने, हम डोका तकवै कोना
 लागल पराहि सभ गाम-घर छोड़ि रहल
 बेमार बुढ़िया हम छोड़ि जयवै कोना
 खयबा ले पात लोक भेल मजबूर आई
 हम काल ई प्रकालक बितयवै कोना

भेल जिनगी जहर
 आब जीवै कोना

देखऽ चाही जे गरीब के, चलू देखावी गाम मे
 शहर मे नहि, भारतवासी लोक बस अछि गाम मे
 नेना-भुटका नङ-घरङ भूखल एक कौर भात ले
 खांसि रहल छै माय, बाप छै बघ लागल सन गाम मे
 घोती एकटा तरे-उपर कहुना तन के क्षपने
 जाड़क राति बिता दैत अछि झुकैत घूर तर गाम मे
 टाटक घर खड़ नहि उपर अछि बन्धुआ मजदूर बनल
 हनन भेल सभ इच्छा तैयो जीबि रहल अछि गाम मे
 डोका-साख अर मूस छै बहुतेक आधार बनल
 भाग्यवलीक दिन अन्न, भेटैछ ओकरा गाम मे

प्रकाश लोकिका विनि
 विनि-प्रकाश विनि २५/५

साँस भरल, दीप जरल न आएल बोनिहार हमर
 प्रतिका मे अखि दुनु भेल अखि पथार हमर
 घूमि अबैछ रोज-रोज नै लागैछ बोनि कतहु
 भूख ! भूख ! भूखक लेल ज्वाला भकराड़ हमर
 धिर रहतै प्राण कते अन्न बिना देह बीच
 सागेटा करमी केर जिनगीक आघार हमर
 होइतै जे टिकसो केर टाका हम पठा दितिए
 जा रहलै पनिजाब सभ होइतै उद्धार हमर
 करबा ले कुटीनो-पिसान कोनाक' निकलू हम
 अखि नेना पिहुआ, भेल नूआ तार-तार हमर

अपना मन-का आ लोका जेप
 छोड़ि पैसाव आगव / पिशाचिका
 गनीयता / आधा दुन।

□

मैथिली भाषा में समुदाय

बनल बौक आ बहीर रहब कहिया घरि
हत्या अधिकारक करैत रहब कहिया घरि
भाषायी अधिकार हमरा सँ दूर बहुत
बितल पैंतीस बरख चुप रहब कहिया घरि
मिसरजी, लालाजी, झाजी औ यादव जी
बाजू ने लोरिक-सल्हेस बनब कहिया घरि
बन्दी छथि मैथिली अपने घर-आङन मे
मुक्तिक प्रयासाधिकार ! करब कहिया घरि
लड़ने बिनु अधिकार भेटल न ककरो
क्रांतिक आह्वान आब करब कहिया घरि

□

मान के शास्त्र आमा

अपहरण भ' रहल, सरेग्राम सड़क पर
अछि देखि रहल लोक, सरेग्राम सड़क पर
घातंकक वातावरण करमीक लत्ती सन
अछि पसरल सभ ठाम, सरेग्राम सड़क पर
लोभ केर बेइयाक फंसल रूप जाल भे
अछि दल-सदल लड़छ, सरेग्राम सड़क पर
बम केर घमाका हेत कखन कोम्हर सँ
अछि कयो ने जनैछ, सरेग्राम सड़क पर
ग्रान्हर ओ जकरा पर निर्भर व्यवस्था
अछि चाहि रहल भाइ, सरेग्राम सड़क पर

□

बसाते में तीर अहाँ छोड़ें छी
बन्हने बिनु बान्ह, धार मोड़ें छी

परुकी ने गाछ पर, करोड़िया जकाँ
ठाढ़ कोना, नरसर केँ जाड़ें छी

मुँहक ने होइछ खतियान, बुझि अपने
घाड़ो गप्प केर बन्हता छोड़ें छी

सभटा असम्भव अछि हस्तामलक सन
ओ कुदिए क' चान अहाँ तोड़ें छी

थिकौं प्रणम्य, प्रणाम स्वीकार करू
हम हारि गेलौं, मुँह अपन मोड़ें छी

सामान्य अंगुलीक निष्पत्ति, अतिरिक्त उक्तप्रकार,
अक्षित,

ठेंगा जकां ठाढ़ भेल, नागे देखैत छी

हम बाट-घाट सभठाम, नागे देखैत छी

बिष सँ बिषाक्त भेल, कहबं छल चानन जे

चानन केर आनन पर, नागे देखैत छी

बिषमय मे पड़ल मोन-प्राण हमर

हर डेगक ठहराव पर, नागे देखैत छी

श्री गिरगिटे जकां नाग बदलेछ रूप आइ

इसेछ बिहुला के सुतिया, नागे देखैत छी

अजगर तँ गोड़ि जाइछ, लागत ते थाह कोनो

रघियो के छनैत मुदा नागे देखैत छी

७

मौसममे बदलाव आवि गेल देखू ने
वसन्ते मे बरिसात आवि गेल देखू ने
उदासी भरल दिन, गति जिनगीक उदास सन
नदी मुखायल सभ खेत दहा गेल, देखू ने

मनुखे सन मौसमी उनटि कऽ चलय लागल
लता वेलीक जही फूला गेल, देखू ने

एक-दोसरा सँ चलैछ काते-कात भेल *मनुष्यक अतिथि*
बिनु बाते दुनाली देखा गेल, देखू ने *संकीर्त मे ।*

परिवि-बीच नव-नव उगंछ परिवि रोज
लहरि लोल जेना लहरा गेल, देखू ने

सौगो जँका झोंट घाब मुनसा बढौलक *आधुनिकताक*
झोंट नौघा सँ सौगो छटा गेल, देखू ने *जलन फल गकार*
वा प्रकृति

शहर केर सागर मे घाइ गाम डूमि रहल
कामांघ कामिनी के पकड़ि जेना चूमि रहल
भौंरा जकां रस लोभी, वसन्ती गुलाब पर
फँलौने जाल अपन शोषण केर घूमि रहल
हरियायल खेत झुकल सीस गहुँम, धान केर
महाजन केर सूदि-जोंक तखनहि सँ चूसि रहल
मुखिया बेमान, लोभग्रसित सरपंच घाइ
भेल नाडर इमान, बैशाखी पर रेडि रहल
सामाजिक सुरक्षाबला पेन्सन सरकारी
मुइलहो केर नाम पर उठा-उठा बूकि रहल

KANHA
PAR
LAHAS
HAMAR

Shri Kalamand Bhatta.
Kosi Project
Simpaul
Saharsa